

## लगि-संवेदनशील नीति-निर्माण

यह एडिटोरियल 29/12/2024 को हदुस्तान टाइम्स में प्रकाशित “[Gender sensitive policing needed](#)” पर आधारित है। यह लेख अन्ना विश्वविद्यालय मामले में मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा तमलिनाडु पुलिस की आलोचना पर प्रकाश डालता है, जिसमें लगि-संवेदनशील वधि को लागू करने में कमियों को उजागर किया गया है। जिसमें पीड़ित को दोषी ठहराना और नजिता का उल्लंघन लैंगिक संवेदनशीलता और कानून प्रवर्तन में महिला प्रतिनिधित्व की बड़ी चिंताओं को दर्शाता है।

### प्रलमिस के लयि:

[आर्थिक सर्वेक्षण 2023-2024](#), [श्रम बल भागीदारी दर \(LFPR\)](#), [जेंडर गैप इंडेक्स](#), [STEM \(वजिज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणति\)](#), [18वीं लोकसभा](#), [राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो \(NCRB\) 2023](#), [संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य \(SDG\)](#), [भारतीय संविधान](#), [एलमिनिशन ऑफ ऑल फॉर्म ऑफ डिसक्रिमिनेशन अगेंस्ट वीमेन \(CEDAW\)](#), [जेंडर बजट](#), [केंद्रीय बजट 2024-25](#), [राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय \(NSO\)](#), [मुद्रा](#)

### मेन्स के लयि:

लैंगिक समानता के लयि लगि-संवेदनशील नीति-निर्माण का महत्त्व और महिलाओं से संबंधित मुद्दों का समाधान।

लगि-संवेदनशील नीति-निर्माण वभिनि लगिों पर नीतियों के वशिषिट और प्रायः असमान प्रभावों का अभनिरिधारण कर उनका हल करने पर आधारित है, वशिषकर ऐसे समाजों में जहाँ ऐतहिासिक और प्रणालीगत असमानताएँ बनी हुई हैं। भारत में, अन्ना विश्वविद्यालय यौन उत्पीड़न मामले जैसी घटनाओं से ऐसी नीतियों की तत्काल आवश्यकता उजागर हुई है, जहाँ संस्थागत असंवेदनशीलता ने पीड़ितों द्वारा सामना किये जाने वाले आघात को बढ़ा दिया है। पर्याप्त सहायता और न्याय प्रदान करने में वफिलता व्यापक सामाजिक चुनौतियों को दर्शाती है, जो एक परिवर्तनकारी दृष्टिकोण की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को रेखांकित करती है। लगि-संवेदनशील नीतियों का उद्देश्य न केवल तत्काल असमानताओं को दूर करना है, बल्कि न्यायसंगत ढाँचे का निर्माण करके समय के साथ स्थायी सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक समानता प्राप्त करने के लयि आधारभूत उपकरण के रूप में भी काम करना है।

## लगि-संवेदनशील नीति-निर्माण क्यों आवश्यक है?

### ■ नरितर लैंगिक असमानताएँ:

- महिला श्रम बल भागीदारी: [आर्थिक सर्वेक्षण 2023-2024](#) में पाया गया है कि महिला श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) सत्र 2017-2018 में 23.3% से बढ़कर सत्र 2022-2023 में 37% हो गई, जो चीन के 61.5% जैसे वैश्विक एवं क्षेत्रीय बेंचमार्क से अपेक्षाकृत कम है।
  - इससे महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता बाधित होती है तथा राष्ट्रीय उत्पादकता कम होती है।
- वेतन असमानता: [जेंडर गैप इंडेक्स](#) के अनुसार, भारत की आर्थिक समानता 39.8% है, जिसका अर्थ है कि पुरुषों द्वारा अर्जित प्रत्येक 100 रुपए के लयि महिलाएँ 39.8 रुपए कमाती हैं। हालाँकि वर्ष 2024 में भारत का लैंगिक अंतराल 64.1% अनुमानित है।
  - वेतन अंतराल महिलाओं के काम का मूल्य कम करता है, जिससे आर्थिक निर्भरता बढ़ती है और शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं विकास में नविश सीमति होता है।
- शैक्षणिक अंतराल: [महिलाओं में साक्षरता दर](#) में सुधार लाने में महत्त्वपूर्ण प्रगतिके बावजूद, प्रणालीगत बाधाएँ बनी हुई हैं जो लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने से रोकती हैं।
  - इसके अलावा, CSIR रपिर्ट 2022 के अनुसार, भारत में वैश्विक स्तर पर महिला [STEM \(वजिज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणति\)](#) स्नातकों का उच्चतम प्रतिशत (40%) होने के बावजूद, [STEM नौकरियों में उनका प्रतिनिधित्व केवल 14% ही है।](#)
  - [गरीबी, ग्रामीण क्षेत्रों में](#) अपर्याप्त बुनियादी अवसंरचना और महिलाओं की तुलना में पुरुषों की शिक्षा को प्राथमिकता देने वाले सामाजिक मानदंड जैसे कारक लैंगिक असमानताओं को बढ़ाते हैं।
- राजनीतिक अल्प प्रतिनिधित्व: [18वीं लोकसभा](#) में 74 महिलाएँ नरिवाचति हुईं, जो कुल संख्या का 13.6% है, जो 17वीं लोक सभा में 78 महिलाओं (14.4%) से थोड़ी कम है, जो देश के सर्वोच्च नरिणय लेने वाले नकिय में उनकी सीमांत उपस्थतिको दर्शाता है।
  - राजनीति में इस अल्प प्रतिनिधित्व के कारण महिला-केंद्री नीतियों को अपर्याप्त समर्थन प्राप्त होता है और व्यापक शासन के लयि आवश्यक दृष्टिकोणों की वधिता कम हो जाती है।

## ■ सामाजिक-सांस्कृतिक बाधाएँ:

- **पतिसत्तात्मक मानदंड:** गहरी जड़ें जमाए हुए पतिसत्तात्मक दृष्टिकोण महिलाओं की गतशीलता, नर्णय लेने की शक्ति और महत्त्वपूर्ण संसाधनों तक पहुँच को बाधति करते हैं।
  - उदाहरण के लिये, लगभग 47% भारतीय महिलाएँ घरेलू वतितीय नर्णयों में अपनी बात रखती हैं, जो परवारों और समुदायों में लैंगिक शक्ति असंतुलन की व्यापक प्रकृति को दर्शाता है।
- **अंतरवभागीय भेदभाव:** दलितों और मुसलमानों जैसे सीमांत समुदायों की महिलाओं को लगी, जाति एवं धार्मिक पूरवाग्रहों से जुड़ी जटिल चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
  - उदाहरण के लिये, वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, मुसलमानों का श्रमिक जनसंख्या अनुपात 32.6 था, जबकि हिंदुओं और ईसाइयों का अनुपात क्रमशः 41 और 41.9 था।
- **हिसा और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:** राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) 2023 की वर्ष 2023 की रपिर्ट से पता चलता है कि वर्ष 2022 में भारत में महिलाओं के प्रतहि होने वाले अपराधों में 4% की चिंताजनक वृद्धि हुई, जिसमें क्रूरता, अपहरण, हमले और यौन उत्पीड़न के मामले शामिल हैं।
  - सामाजिक कलंक, न्याय प्रणाली में वशिवास की कमी, प्रतशिोध के भय, दुर्व्यवहार और असुरक्षा की स्थितिके कारण कई मामले दर्ज नहीं हो पाते।

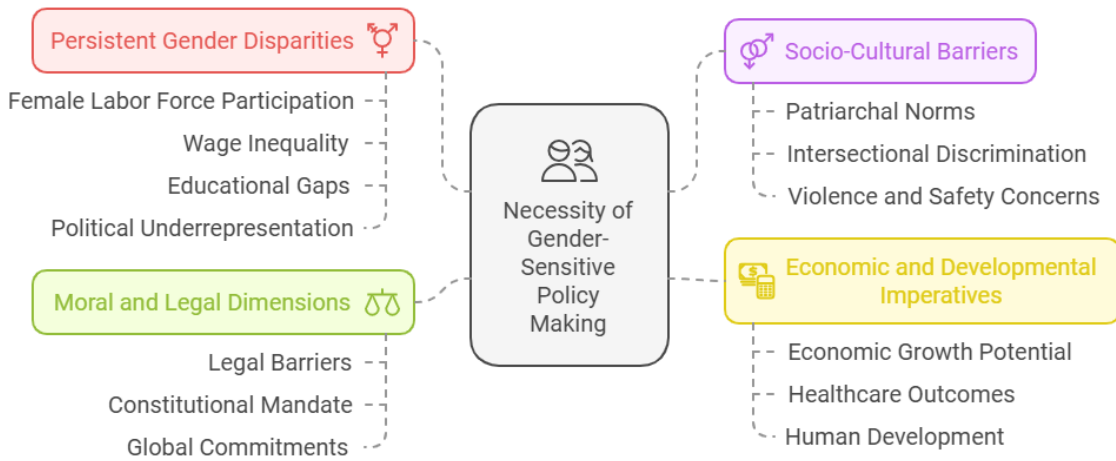
## ■ आर्थिक एवं वकिसात्तात्मक अनविर्यताएँ

- **आर्थिक वकिसा की संभावना:** यह अनुमान लगाया गया है कि अर्थव्यवस्था में महिलाओं की समान भागीदारी से भारत के वर्ष 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद में 16% की वृद्धि हो सकती है, जिससे 700 बलियन डॉलर की वृद्धि होगी और वकिसा दर में 1.4 प्रतशित अंकों की वृद्धि होगी।
  - इस कषमता को साकार करने की दशिा में महिलाओं को अर्थव्यवस्था में पूरण रूप से भाग लेने से रोकने वाली बाधाओं को दूर करने के लिये लक्षति हस्तकषेप की आवश्यकता है।
- **स्वास्थ्य देखभाल परणाम:** लगी-संवेदनशील स्वास्थ्य देखभाल नीतियाँ मातृ एवं शशि स्वास्थ्य परणामों को बेहतर बनाने में प्रभावी सदिध हुई हैं।
  - भारत में मातृ मृत्यु दर प्रत 100,000 जीवति जन्मों पर 97 है तथा लक्षति पहलों से इसमें और कमी लाई जा सकती है जिससे समतापूरण स्वास्थ्य देखभाल पहुँच सुनिश्चति की जा सकती है।
- **मानव वकिसा: लैंगिक असमानताओं को समाप्त करना** संयुक्त राष्ट्र सतत वकिसा लक्ष्य (SDG) को प्राप्त करने के लिये मौलिक है, वशिष रूप से लक्ष्य 5 पर, जो सतत वकिसा के लिये आधारशला के रूप में लैंगिक समानता पर बल देता है।

## ■ नैतिक और वधििक आयाम

- **कानूनी बाधा:** एक महत्त्वपूर्ण कानूनी बाधा लगी-संवेदनशील नीति-नरिमाण की अनुपस्थिति है, जो अन्याय को कायम रखती है।
  - अन्ना वशिषवदियालय हमला मामले में पीडितों को दोषी ठहराने के लिये मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा तमलिनाडु पुलसि की आलोचना, कानून प्रवर्तन प्रथाओं में सुधार की तत्काल आवश्यकता पर बल देती है।
- **संवैधानिक अधदिश:** भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14, 15, 16, 39(d), 42 स्पष्ट रूप से वधििके समकष समता की गारंटी देते हैं और लगी के आधार पर भेदभाव पर रोक लगाते हुए महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।
  - इन प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चति करना शासन की मूलभूत जमिमेदारी है।
- **वैश्विक प्रतबिद्धताएँ:** महिलाओं के साथ होने वाले सभी प्रकार के भेदभाव के उनमूलन पर कन्वेंशन (CEDAW) जैसे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के हस्ताक्षरकर्त्ता के रूप में, भारत लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करने वाली नीतियों के अंगीकरण एवं लागू करने के लिये बाध्य है।

//



लगी-संवेदनशील नीति-नरिमाण की दशिा में क्या प्रमुख कदम उठाए गए हैं?

## ■ वधायी संरचना

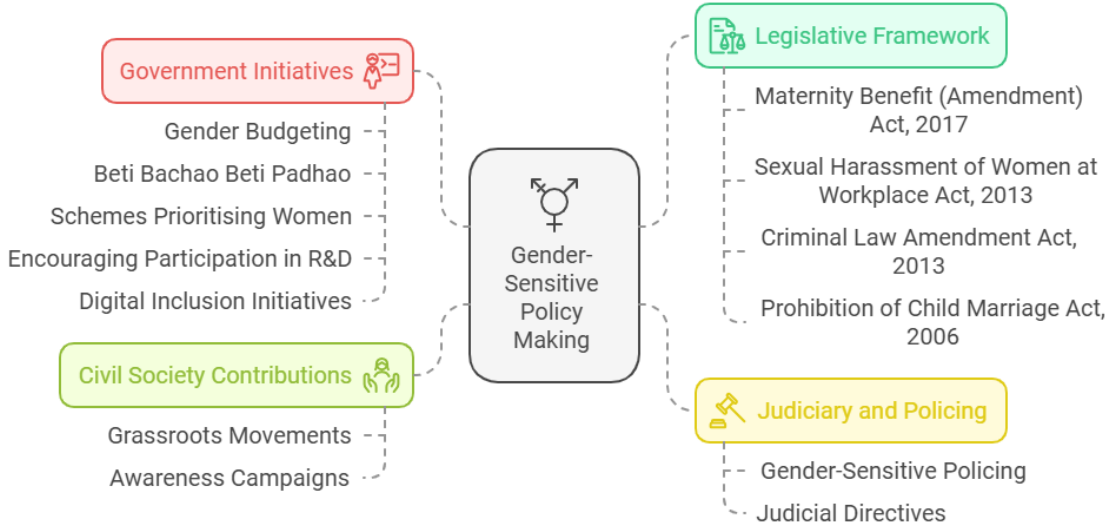
- **मातृत्व लाभ (संशोधन) अधिनियम, 2017:** प्रसवोत्तर बेहतर देखभाल के लिये **मातृत्व अवकाश को 12 से बढ़ाकर 26 सप्ताह कर दिया गया** है तथा महिलाओं की कार्यबल भागीदारी को समर्थन देने के लिये 50 से अधिक कर्मचारियों वाले कार्यस्थलों में क्रेच सुविधाएँ अब अनिवार्य कर दी गई हैं।
- **कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न अधिनियम, 2013:** यौन उत्पीड़न से संबंधित कार्यस्थल शिकायतों के समाधान के लिये एक औपचारिक तंत्र प्रदान करने हेतु संगठनों में **आंतरिक शिकायत समितियों (ICC)** के गठन को अनिवार्य बनाया गया।
- **आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम, 2013:** यौन उत्पीड़न और पीछा करने जैसे अपराधों के लिये **कठोर दंड का प्रावधान** किया गया, जो **लगा आधारित हिसा** से नपिटने के लिये दृढ़ प्रतिबद्धता का संकेत देता है।
- **बाल विवाह निषेध अधिनियम, 2006:** इसका उद्देश्य कानूनी दंड लगाकर और जागरूकता को बढ़ावा देकर **बाल विवाह का प्रतिषेध करना** है, विशेष रूप से ग्रामीण एवं सीमांत समुदायों में जहाँ यह प्रथा अभी भी प्रचलित है।

## ■ सरकारी पहल

- **लगा आधारित बजट:** भारत में सत्र 2005-06 में शुरू की गई **जेंडर बजट** नीति और संसाधन आवंटन में लगे संबंधी दृष्टिकोण को एकीकृत करने के लिये एक महत्त्वपूर्ण उपागम है।
  - **केंद्रीय बजट 2024-25** में महिलाओं और बालिकाओं को लाभ पहुँचाने वाली योजनाओं के लिये **3 लाख करोड़ रुपए** से अधिक का आवंटन किया गया है, जिसका उद्देश्य महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास को बढ़ावा देना है।
  - इसके अलावा, मंत्रालयों और विभागों ने व्यय की नगिरानी एवं महिलाओं पर इसके प्रभाव का आकलन करने के लिये **जेंडर बजट प्रकोष्ठों की स्थापना** की है।
- **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ (BBBP):** जन्म के समय लिंगानुपात में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया, जो सत्र 2014-15 में 918 से बढ़कर सत्र 2019-20 में 934 हो गया, जो लड़के बच्चों के लिये चुनौतीपूर्ण सांस्कृतिक प्राथमिकताओं पर इसके प्रभाव को उजागर करता है।
  - **बालिकाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और पोषण** सुनिश्चित करने के लिये मंत्रालयों के एकीकृत प्रयासों के बावजूद, **राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)** की रिपोर्ट के अनुसार भारत में **12.6% छात्राएँ स्कूल छोड़ देती हैं**, जिनमें से **19.8% माध्यमिक स्तर पर** और **17.5% उच्च प्राथमिक स्तर पर** पढ़ाई छोड़ देती हैं।
- **महिलाओं को प्राथमिकता देने वाली योजनाएँ: मनरेगा, उज्ज्वला योजना और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना** जैसी विभिन्न सरकारी योजनाएँ नौकरियों, वित्तीय सहायता, स्वास्थ्य सेवा एवं ऊर्जा तक तरजीही पहुँच प्रदान करके महिला सशक्तीकरण को प्राथमिकता देती हैं, जिसका उद्देश्य महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, स्वास्थ्य तथा उनके समग्र कल्याण को बढ़ावा देना है।
  - उदाहरण के लिये, वित्तीय वर्ष 2023-24 में **कुल मुद्रा लाभार्थियों में से 63.6% महिला उद्यमी थीं**।
  - इसके अलावा, हिसा से प्रभावित महिलाओं को **वन स्टॉप सेंटर योजना** चिकित्सा, कानूनी, मनोवैज्ञानिक और पुलिस सहायता सहित एकीकृत सेवाएँ प्रदान करती है। **प्रशिक्षण और रोज़गार कार्यक्रम (STEP) को समर्थन** महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण के लिये प्रशिक्षण एवं रोज़गार के अवसर प्रदान करता है।
- **अनुसंधान एवं विकास में भागीदारी को प्रोत्साहित करना: संस्थानों के परिवर्तन के लिये लैंगिक उन्नति (GATI) कार्यक्रम** तथा **जैव प्रौद्योगिकी केंद्रिय उन्नति और पुनः अभिविन्यास (BioCARE) योजना** STEM एवं **जैव प्रौद्योगिकी** में केंद्रिय विकास के अवसर, अनुसंधान अनुदान व फेलोशिप प्रदान करके अनुसंधान एवं विकास में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देती है।
- **डिजिटल समावेशन पहल: PMGDISHA** ने वंचित क्षेत्रों की महिलाओं को लक्ष्यित किया, उनकी वित्तीय और नागरिक भागीदारी बढ़ाने के लिये डिजिटल भुगतान प्रशिक्षण तथा ई-गवर्नेंस मॉड्यूल प्रदान किये।
- **न्यायपालिका और नीति-निर्माण व्यवस्था**
  - **लगा-संवेदनशील पुलिसिंग: गृह मंत्रालय (MHA)** की **संसदीय स्थायी समिति** ने सफ़िरशि की है कि गृह मंत्रालय राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों को प्रत्येक ज़िले में कम-से-कम **एक महिला पुलिस स्टेशन स्थापित करने** की सलाह दे।
  - पुलिस कर्मियों के लिये **लगा-संवेदनशीलता प्रशिक्षण** का उद्देश्य लैंगिक मुद्दों के बारे में उनकी समझ में सुधार लाना तथा महिलाओं से जुड़े मामलों का सहानुभूतपूर्वक नपिटान सुनिश्चित करना है।
- **न्यायिक नरिदेश: सर्वोच्च न्यायालय** के दशानरिदेश कार्यस्थलों और शैक्षणिक संस्थानों में **लैंगिक-संवेदनशील नीतियों को अनिवार्य** बनाते हैं, **जागरूकता को बढ़ावा** देते हैं एवं **समावेशी वातावरण को बढ़ावा** देते हैं।
  - इसके अलावा, **भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने लैंगिक रूढ़िवादिता को सुधारने** तथा न्यायिक नरिणयों और लेखन में, विशेष रूप से महिलाओं के बारे में, **हानिकारक रूढ़िवादिता से बचने** के लिये न्यायाधीशों को मार्गदर्शन देने के लिये **एक पुस्तिका तैयार** की है।

## ■ नागरिक समाज का योगदान

- **ज़मीनी स्तर के आंदोलन: SEWA (स्व-नयोजित महिला संघ)** जैसे गैर-सरकारी संगठन अनौपचारिक क्षेत्र में महिलाओं के लिये **श्रम अधिकारों, सामाजिक सुरक्षा और वित्तीय समावेशन** का समर्थन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि नीतितगत चर्चाओं में उनकी आवाज़ का प्रतिनिधित्व हो।
- **जागरूकता अभियान:** मासिक धर्म स्वास्थ्य, घरेलू हिंसा और आर्थिक साक्षरता से संबंधित समुदाय-आधारित कार्यक्रमों ने महिलाओं को सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने तथा समान व्यवहार की मांग करने के लिये सशक्त बनाया है।



## लगि-संवेदनशील नीत-निरिमाण के लयि आगे की राह:

- **संस्थागत तंत्र को सुदृढ़ करना:** लगि-वशिष्ट कार्यक्रमों के लयि व्यवस्थति योजना और संसाधनों का आवंटन सुनशिचति करने के लयि मंत्रालयों में लगि बजट प्रकोष्ठों के दायरे का वसितार करने की आवश्यकता है।
  - महिलाओं के जीवन में सुधार के लयि **बजटीय आबंटन की प्रभावशीलता और प्रभाव का आकलन करने के लयि नयिमति ऑडिट** आयोजति कयि जाने चाहयि।
- **महिला आरक्षण अधनियिम लागू करना:** वधिायी नकियायों में महिलाओं का **33% प्रतनिधित्व** सुनशिचति करने के लयि **नारी शक्तिवदंन अधनियिम** के कार्यानवयन में तेज़ी लाने की आवश्यकता है, जसिसे शासन और नीत-निरिमाण में उनकी भागीदारी बढ़े।
- **कार्यस्थल समानता: समान वेतन कानूनों** का कड़ाई से अनुपालन सुनशिचति करना तथा संगठनों को रोजगार के सभी स्तरों पर लैंगकि प्रतनिधित्व के लयि विविधता मानदंड अपनाने के लयि प्रोत्साहति करने की आवश्यकता है।
- **डेटा संग्रहण और वशिलेषण: वभिनिन कषेत्रों में लगि-आधारति डेटा** के लयि रयिल टाइम ट्रैकिगि प्रणाली को लागू करने की आवश्यकता है, जसिसे साक्ष्य-आधारति नीत-निरिमाण और मूल्यांकन संभव हो सके।
  - महिलाओं द्वारा मुख्य रूप से कयि जाने वाले अवैतनकि देखभाल कार्य के आर्थकि मूल्य का आकलन करने और उनका अभनिरिधारण करने के लयि व्यापक समय-उपयोग सर्वेक्षण आयोजति कयि जाने चाहयि।
- **शकिषा और जागरूकता:** लैंगकि समानता के संबंध में छात्रों में प्रारंभकि जागरूकता और संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लयि स्कूल पाठ्यक्रम में लैंगकि अध्ययन को शामिल कयि जाने की आवश्यकता है।
  - यौन हसिा और प्रजनन अधिकार जैसे मुद्दों से जुड़े कलंक को दूर करने के लयि राष्ट्रव्यापी अभयान शुरू करने, स्वतंत्र संवाद और सामाजकि स्वीकृति को प्रोत्साहति कयि जाना चाहयि।
- **डजिटिल सशक्तीकरण:** महिलाओं को साइबर सुरक्षा और डेटा साक्षरता में प्रशकिषति करने के लयि लक्षति आउटरीच कार्यक्रम प्रदान करने, **डजिटिल वभिजन** को पाटने तथा ऑनलाइन शकिषा एवं वत्तितीय सेवाओं तक पहुँच को सक्षम बनाने की आवश्यकता है।
  - इन उच्च वकिस वाले कषेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहति करने के लयि **STEM कषेत्रों** में प्रशकिषण कार्यक्रमों का वसितार कयि जाना चाहयि।
- **शकियात नविवरण के लयि ई-गवर्नेंस:** लगि आधारति हसिा की रपिर्टगि के लयि उपयोगकर्त्ता अनुकूल डजिटिल प्लेटफॉर्म वकिसति करने, गुमनामी सुनशिचति करने और त्वरति नविवरण तंत्र को सक्षम करने की आवश्यकता है।
- **वैश्वकि सर्वोत्तम प्रथाओं से सीखना:** वरष 2014 में, **स्वीडन ने वशि्व की पहली सपष्ट रूप से नारीवादी वदिश नीत** का अंगीकरण कयिा, जसिमें नरिणय लेने की सभी प्रक्रयिाओं में लैंगकि परपिरेक्ष्य को एकीकृत कयिा गया, जसिे भारत के सामाजकि-राजनीतकि संदर्भ के साथ जोड़ा जा सकता है।
  - कनाडा, फ्राँस और मैक्सिको जैसे देशों ने भी इसी प्रकार की नीतियाँ लागू की हैं, जो लगि-समावेशी शासन की परविरतनकारी शक्त्ता को रेखांकति करती हैं।

## नषिकर्ष

लगि-संवेदनशील नीत-निरिमाण केवल एक शासन उपागम नहीं है, बल्कि एक सामाजकि-आर्थकि आवश्यकता भी है। यद्यपि भारत ने **प्रगतशील वधि और पहलों** के माध्यम से सराहनीय प्रगति की है, फरि भी प्रणालीगत अंतराल को समाप्त करने के लयि नरितर प्रयासों की आवश्यकता है। **संरचनात्मक बाधाओं को दूर करके और समावेशी ढाँचों को बढ़ावा देकर**, लैंगकि समानता को एक आदर्श के द्वारा **वास्तवकिता में बदला जा सकता है**, जसिसे सभी के लयि न्याय, सम्मान एवं सतत् वकिस सुनशिचति हो सके।

दृष्टिभेन्स प्रश्न:

**प्रश्न.** भारत में महिलाओं के समक्ष कौन-सी प्रमुख सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताएँ हैं, तथा लिंग-संवेदनशील नीति-निर्माण से किस प्रकार इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है?

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

????????

**प्रश्न.** नमिन्लखिति में से कौन, वशिव के देशों के लयि 'सार्वभौम लैंगकि अंतराल सूचकांक (ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स)' का श्रेणीकरण प्रदान करता है ? (2017)

- (a) वशिव आर्थकि मंच
- (b) UN मानव अधकिार परषिद्
- (c) UN वूमन
- (d) वशिव स्वास्थय संगठन

उत्तर: (a)

## मेन्स

**प्रश्न.** भारत में महिला सशक्तिकरण के लयि जेंडर बजटगि अनवार्य है। भारतीय प्रसंग में जेंडर बजटगि की क्या आवश्यकताएँ एवं स्थिति हैं? (2016)

**प्रश्न.** भारत में एक मध्यम-वर्गीय कामकाजी महिला की अवस्थतिको पतितंत्र (पेट्रिआर्की) किस प्रकार प्रभावति करता है? (2014)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/gender-sensitive-policy-making>

